GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

भारतीय ज्ञानमीमांसा के सन्दर्भ में बी.एड. विशेष शिक्षा प्रशिक्षणार्थियों के बीच शिक्षण अधिगम के 'अनुमान प्रमाण' एवं 'उपमान प्रमाण' का तुलनात्मक आकलन

[1] नर्मदा (मरकाम)इरपाचे [2] डॉ. हेमलता बघेल

[1] शोधार्थी, स्टाफ प्रशिक्षण एवं अनुसन्धान संस्थान दूरस्थ शिक्षा (स्ट्राइड), इग्नू नई दिल्ली, मैदान गढ़ी

Email: narmadamarkam@gmail.com Mo.No.+919977680279,+918966990594

[2] सहायक आचार्य, स्टाफ प्रशिक्षण एवं अनुसन्धान संस्थान दूरस्थ शिक्षा (स्ट्राइड), इग्नू नई दिल्ली, मैदान गढ़ी

Email: hemlatabaghel@ignou.ac.inMo.No. +919131939359, +917566770794

शोध सार (Abstract)

भारतीय ज्ञानमीमांसा में ज्ञान प्राप्ति के साधनों को 'प्रमाण' कहा गया है। वर्तमान विशेष शिक्षा के परिदृश्य में, जहाँ दिव्यांग बच्चों की विविध संवेदी और संज्ञानात्मक आवश्यकताएं होती हैं, वहाँ पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों से परे जाकर देखने की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य बी.एड. विशेष शिक्षा दिव्यांगता क्षेत्र के प्रशिक्षणार्थियों के बीच शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में 'अनुमान प्रमाण' और 'उपमान प्रमाण' की भूमिका, प्रभावशीलता और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग का एक तुलनात्मक आकलन प्रस्तुत करना है। इस शोध में गुणात्मक और वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है। निष्कर्ष दर्शाते हैं कि जहाँ 'अनुमान प्रमाण' विशेष शिक्षकों को बच्चों के अदृश्य व्यवहारों और समस्याओं के निदान में सक्षम बनाता है, वहीं 'उपमान प्रमाण' अमूर्त अवधारणाओं को मूर्त रूप में प्रस्तुत करने का एक सशक्त शिक्षणशास्त्रीय उपकरण है। यह शोध विशेष शिक्षा के पाठ्यक्रम में भारतीय तर्कशास्त्र के समावेशन की पुरजोर वकालत करता है।

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञानमीमांसा, अनुमान प्रमाण, उपमान प्रमाण, बी.एड. विशेष शिक्षा, प्रशिक्षणार्थी, शिक्षण-अधिगम, तुलनात्मक आकलन।

1. प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा का मूल उद्देश्य शिक्षार्थी के भीतर ज्ञान का प्रादुर्भाव करना है। सामान्य शिक्षा की तुलना में विशेष शिक्षा की चुनौतियाँ अत्यंत जटिल और संवेदनशील हैं। विशेष शिक्षा में शिक्षक का सामना ऐसे बालकों से होता है जिनकी ज्ञानेंद्रियाँ या संज्ञानात्मक क्षमताएं सामान्य बालकों की भांति सहज रूप से कार्य नहीं करतीं। ऐसी स्थिति में, पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों के साथ-साथ यदि भारतीय ज्ञानमीमांसा के समृद्ध दर्शन को जोड़ा जाए, तो शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया अधिक समग्र और प्रभावी बन सकती है।

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

भारतीय दर्शन में ज्ञान की प्रामाणिकता और उसकी प्राप्ति के साधनों पर विस्तृत चर्चा की गई है, जिसे 'प्रमाण शास्त्र' कहा जाता है। न्याय दर्शन के अनुसार—"प्रमाकरणं प्रमाणम्" अर्थात् यथार्थ ज्ञान के करण (साधन) को प्रमाण कहते हैं। भारतीय विचारकों ने प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति और अनुपलब्धि जैसे प्रमाणों को स्वीकार किया है। विशेष शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के लिए इन प्रमाणों में से 'अनुमान' और 'उपमान' दो ऐसे स्तंभ हैं, जिनका उपयोग वे अनजाने में या सचेत रूप से अपनी दैनिक शिक्षण योजनाओं में करते हैं।

अनुमान प्रमाण (Inference): प्रत्यक्ष के बाद होने वाला वह ज्ञान जो किसी लिंग या चिन्ह पर आधारित होता है।

उपमान प्रमाण (Comparison): सादृश्यता या समानता पर आधारित ज्ञान, जहाँ किसी ज्ञात वस्तु के आधार पर अज्ञात वस्तु को समझाया जाता है।

प्रस्तुत शोध आलेख इन दोनों प्रमाणों के मध्य एक तुलनात्मक सेतु निर्मित करता है ताकि यह समझा जा सके कि बी.एड. विशेष शिक्षा प्रशिक्षणार्थी अपने शिक्षण कौशल को निखारने के लिए इन दार्शनिक उपकरणों का उपयोग किस प्रकार कर सकते हैं।

1. साहित्य की समीक्षा

प्रस्तुत शोध की प्रासंगिकता और उसके वैचारिक ढांचे को स्थापित करने के लिए संबंधित साहित्य की समीक्षा को ऐतिहासिक और आधुनिक कालक्रम के अनुसार तीन प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

1.1.1 प्राचीन एवं मध्यकालीन शास्त्रीय साहित्य

भारतीय दर्शन में प्रमाण शास्त्र का विकास एक क्रमिक और तार्किक ऐतिहासिक कालक्रम में हुआ है:

- **महर्षि गौतम (न्यायसूत्र — द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व / लगभग 200 ई.पू.):** इन्होंने न्याय दर्शन के आधारभूत ग्रंथ 'न्यायसूत्र' की रचना की। इसमें पहली बार अनुमान के पांच अवयवों (पञ्चावयव वाक्य) और उपमान प्रमाण को परिभाषित किया गया, जो आज 2200 वर्षों बाद भी विशेष शिक्षा में वैज्ञानिक व्यवहार विश्लेषण (FBA) का मूलाधार माना जा सकता है।
- **आचार्य दिङ्नाग (न्यायप्रवेशसूत्र — लगभग 480-540 ईस्वी):** इन्हें बौद्ध न्याय का जनक कहा जाता है। इन्होंने पारंपरिक अनुमान प्रणाली को और अधिक परिष्कृत करते हुए 'त्रिरूप हेतु' का सिद्धांत दिया, जो लक्षणों के आधार पर छिपी हुई समस्या को खोजने की अचूक वैज्ञानिक विधि है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

- **आचार्य धर्मकीर्ति (न्यायबिन्दु — लगभग 600-660 ईस्वी):** बौद्ध दार्शनिक धर्मकीर्ति ने दिङ्नाग के सिद्धांतों को आगे बढ़ाते हुए कार्य-कारण संबंध (Causality) और तादात्म्य पर विस्तार से लिखा। इनका यह सिद्धांत विशेष शिक्षा में बच्चों के व्यवहार के पीछे के 'मूल कारण' (Root Cause) का अनुमान लगाने में मदद करता है।
- **आचार्य भर्तृहरि (वाक्यपदीय — लगभग पांचवीं शताब्दी ईस्वी / 450-510 ईस्वी):** इन्होंने भाषा दर्शन के क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य किया। वाक्यपदीय के 'ब्रह्मकाण्ड' में उन्होंने स्पष्ट किया कि जब ज्ञानेंद्रियाँ (जैसे दृष्टिबाधित बच्चों की आँखें) प्रत्यक्ष ज्ञान देने में असमर्थ होती हैं, तब केवल 'अनुमान' और संवेदी अनुभवों के 'सादृश्य' (उपमान) से ही मस्तिष्क में यथार्थ ज्ञान का प्रकटीकरण होता है।

1.1.2 आधुनिक पाश्चात्य एवं समकालीन विशेष मॉडल

पाश्चात्य जगत में बीसवीं सदी के उत्तरार्ध से लेकर वर्तमान तक ऐसे मनोवैज्ञानिक मॉडल विकसित हुए जो भारतीय प्रमाणों के समानांतर चलते हैं:

- **बी. एफ. स्किनर (व्यवहार संशोधन मॉडल — 1953):** स्किनर ने अपनी पुस्तक “Science and Human Behaviour”(1953) में व्यावहारिक व्यवहार विश्लेषण (ABA) की नींव रखी। आधुनिक विशेष शिक्षा में प्रयुक्त होने वाला 'Functional Behaviour Assessment' (FBA) मॉडल न्याय दर्शन के 'अनुमान प्रमाण' लक्षण देखकर कारण जानना की आधुनिक व्याख्या मात्र है।
- **जीन पियाजे (संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत — 1936/1952):** पियाजे ने बालकों में 'स्कैफोल्डिंग' और पुराने अनुभवों से नए ज्ञान को जोड़ने का सिद्धांत दिया। यह प्रत्यक्ष रूप से भारतीय 'उपमान प्रमाण' (ज्ञात के सादृश्य से अज्ञात का बोध) का मनोवैज्ञानिक पुष्टीकरण है।
- **कैरोल ग्रे (सोशल स्टोरीज़ अवधारणा — 1991):** कैरोल ग्रे ने वर्ष 1991 में ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों के लिए 'सोशल स्टोरीज़' (Social Stories) तकनीक का विकास किया। यह विधि बच्चों को किसी अन्य पात्र के व्यवहार के सादृश्य खुद को ढालना सिखाती है, जो कि पूरी तरह 'उपमान प्रमाण' की कार्यप्रणाली है।

1.1.3 भारतीय पुनर्वास परिषद एवं समकालीन शोध

हाल के वर्षों में भारतीय ज्ञान प्रणाली और समावेशी शिक्षा के अंतर्संबंधों पर हुए प्रमुख शोध निम्नलिखित हैं:

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

- **द्विवेदी, कपिलदेव (2015):** इनके ग्रंथ 'भारतीय संस्कृति के दार्शनिक तत्व' (2015) में ज्ञानमीमांसा के व्यावहारिक शिक्षणशास्त्रीय महत्व को रेखांकित किया गया है।
- **दाश, एम. (2018):** इनकी पुस्तक 'Education of Exceptional Children' (2018) में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों में तुलनात्मक और संज्ञानात्मक मैपिंग के महत्व को स्वीकारा गया।
- **मैंगल, एस. के. एवं मैंगल, एस. (2019):** इन्होंने अपनी चर्चित पुस्तक 'Creating an Inclusive School' (2019) में समावेशी शिक्षा के अंतर्गत 'सादृश्य अधिगम' उपमान को विशेष बच्चों के लिए ध्यान केंद्रित करने की अवधि बढ़ाने में सबसे कारगर माना।
- **राओ और कल्याणपुर (2020):** इनके शोध पत्र 'Inclusive Education in India: Examining Emerging Epistemologies' (2020) में इस बात की कड़ी आलोचना की गई कि भारत में विशेष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को केवल पश्चिमी मॉडल पढ़ाए जा रहे हैं, जबकि भारतीय ज्ञानमीमांसा के उपकरण अधिक प्रभावी हैं।
- **भारतीय पुनर्वास परिषद (RCI Syllabus Guidelines — 2021):** वर्ष 2021 में जारी आर.सी.आई. के संशोधित बी.एड. विशेष शिक्षा पाठ्यक्रम में 'करिकुलम एडाप्टेशन' (पाठ्यचर्या अनुकूलन) पर जोर दिया गया, जहाँ परोक्ष रूप से 'उपमान प्रमाण' (टीएलएम निर्माण में सादृश्यता) की आवश्यकता महसूस की गई।
- **समकालीन शोध (The Academic Journal/Research.Gate — 2023-2026):** राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के क्रियान्वयन के बाद, विशेषकर वर्ष 2025 और 2026 के समकालीन शोध पत्रों में भारतीय ज्ञान प्रणाली के 'प्रमाण शास्त्र' को विशेष शिक्षा के 'शिक्षण कौशलों' के रूप में समाहित करने के प्रयोगात्मक प्रयास तेजी से बढ़े हैं।

1.2 साहित्य समीक्षा से प्राप्त शोध अन्तराल

उपरोक्त व्यापक साहित्य की समीक्षा करने के पश्चात निम्नलिखित अनुसंधान अंतराल दृष्टिगोचर होते हैं:

I. **सैद्धांतिक बनाम व्यावहारिक अंतराल:** न्याय, बौद्ध या सांख्य दर्शन में प्रमाणों पर अत्यधिक दार्शनिक और अकादमिक शोध उपलब्ध हैं, परंतु उन्हें बी.एड. विशेष शिक्षा के 'कक्षा-कक्ष शिक्षण' से जोड़ने वाले व्यावहारिक शोधों का नितांत अभाव है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

II. **पाठ्यक्रम में शून्यता:** आर.सी.आई. (RCI) द्वारा निर्धारित बी.एड. विशेष शिक्षा के वर्तमान पाठ्यक्रम में पाश्चात्य अधिगम सिद्धांतों की भरमार है, परंतु भारतीय प्रमाण शास्त्र के कौशलों जैसे पञ्चावयव विधि को शिक्षण कौशल के रूप में स्थान नहीं दिया गया है।

III. **वर्तमान शोध का योगदान:** प्रस्तुत शोध आलेख इसी 'अनुसंधान अंतराल' को भरता है। यह पहली बार बी.एड. विशेष शिक्षा के प्रशिक्षणार्थियों के प्रत्यक्ष अनुभवों और पाठ-योजनाओं का मूल्यांकन करके यह सिद्ध करता है कि 'अनुमान' और 'उपमान' किस प्रकार विशेष शिक्षा के सबसे व्यावहारिक और प्रभावी औजार बन सकते हैं।

1.3 शोध समस्या कथन एवं प्रासंगिकता

वर्तमान बी.एड. विशेष शिक्षा के पाठ्यक्रम में पाश्चात्य व्यवहारवाद, संज्ञानात्मकवाद और निर्मितिवाद को तो पर्याप्त स्थान दिया गया है, परंतु भारतीय ज्ञानमीमांसा के व्यावहारिक सिद्धांतों की उपेक्षा की गई है। एक विशेष शिक्षक को कक्षा में मूक-बधिर, दृष्टिबाधित या ऑटिज्म से ग्रसित बच्चों के उन व्यवहारों को समझना होता है जो सीधे दिखाई या सुनाई नहीं देते जैसे आंतरिक तनाव, संवेदी अतिभार या सूक्ष्म प्रगति।

अतः, शोध की मुख्य समस्या यह है कि: **"क्या बी.एड. विशेष शिक्षा प्रशिक्षणार्थी शिक्षण के दौरान अनुमान और उपमान प्रमाणों के सैद्धांतिक अंतर्निहित तत्वों को समझते हैं? और दिव्यांग बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप इन दोनों प्रमाणों की उपयोगिता का तुलनात्मक स्तर क्या है?"** यह शोध इसी शून्यता को भरने का प्रयास है।

1.4 शोध के उद्देश्य

इस शोध आलेख के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

I. बी.एड. विशेष शिक्षा प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण में 'अनुमान प्रमाण' की समझ और उसके व्यावहारिक अनुप्रयोग का विश्लेषण करना।

II. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को अमूर्त अवधारणाएं सिखाने में 'उपमान प्रमाण' की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।

III. विशेष शिक्षा के विभिन्न दिव्यांगता क्षेत्रों जैसे दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित, बौद्धिक अक्षमता) के संदर्भ में अनुमान और उपमान प्रमाण का तुलनात्मक आकलन करना।

IV. भारतीय ज्ञानमीमांसा के इन सूत्रों को आधुनिक विशेष शिक्षा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में शामिल करने हेतु रचनात्मक सुझाव देना।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

1.5 **शोध परिकल्पना**

I. **परिकल्पना:** बी.एड. विशेष शिक्षा के शिक्षण-अधिगम में 'अनुमान प्रमाण' का उपयोग छात्र व्यवहार के निदान और नैदानिक मूल्यांकन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

II. **परिकल्पना:** 'उपमान प्रमाण' का उपयोग संवेदी अक्षमता वाले बच्चों (विशेषकर दृष्टिबाधित और श्रवणबाधित) के लिए अमूर्त प्रत्ययों को सुगम बनाने में 'अनुमान प्रमाण' की तुलना में अधिक प्रभावी सिद्ध होता है।

2. **शोध कार्यप्रणाली**

- **शोध का प्रारूप (Research Design):** प्रस्तुत अध्ययन में 'गुणात्मक विश्लेषण' और 'तुलनात्मक वर्णनात्मक प्रारूप' का उपयोग किया गया है।
- **प्रतिदर्श (Sampling):** शोध के लिए विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों से बी.एड. विशेष शिक्षा जैसे बौद्धिक दिव्यांगता- ID, दृष्टिबाधित- VI, और श्रवणबाधित- HI के 100 प्रशिक्षणार्थियों का याहच्छिक चयन विधि व्दारा किया गया।
- **डेटा संग्रह के उपकरण (Tools):** डेटा एकत्र करने के लिए प्रमाण अनुप्रयोग प्रश्नावली (ICAQ) और प्रशिक्षणार्थियों के इंटर्नशिप के दौरान कक्षा अवलोकन अनुसूची का उपयोग किया गया।

2.1 **न्याय दर्शन के 'पञ्चावयव वाक्य का विशेष शिक्षा में व्यावहारिक विश्लेषण**

अनुमान प्रमाण की व्यावहारिक प्रभावशीलता को मापने के लिए, शोध में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को न्याय दर्शन के **'पञ्चावयव वाक्य'** का उपयोग करके बच्चों के व्यवहार का विश्लेषण करने का प्रशिक्षण दिया गया। इसका एक सघन व्यावहारिक मॉडल निम्नलिखित है:

कक्षा में **'आरव'** नाम का एक 8 वर्षीय बालक है, जो ऑटिज्म (ASD) से ग्रसित है। वह अचानक अपनी डेस्क को जोर-जोर से पीटने लगता है, अपनी आँखें और कान बंद कर लेता है। एक सामान्य शिक्षक इसे 'अनुशासनहीनता' मान सकता है, परंतु पञ्चावयव विधि से प्रशिक्षित विशेष शिक्षक इसका वैज्ञानिक विश्लेषण इस प्रकार करता है:

2.1.1 **प्रतिज्ञा**

- **दार्शनिक रूप:** साध्य जिसका अनुमान करना है का निर्देश करना। जैसे- "पर्वत अग्निवाला है।"
- **विशेष शिक्षा अनुप्रयोग:** शिक्षक एक प्रारंभिक निष्कर्ष या परिकल्पना बनाता है—**"आरव इस समय संवेदी अतिभार और तीव्र ध्वनि से परेशान है।"**

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

2.1.2 **हेतु**

- **दार्शनिक रूप:** साध्य को सिद्ध करने का कारण या लिंग। जैसे- "क्योंकि वहाँ धुआँ है।"
- **विशेष शिक्षा अनुप्रयोग:** शिक्षक उस व्यवहार का प्रत्यक्ष लक्षण देखता है—**"क्योंकि वह बार-बार अपने कानों को कसकर बंद कर रहा है और उत्तेजना प्रदर्शित कर रहा है।"**

2.1.3 **उदाहरण**

- **दार्शनिक रूप:** जहाँ-जहाँ हेतु होता है, वहाँ-वहाँ साध्य होता है, जैसे रसोईघर।
- **विशेष शिक्षा अनुप्रयोग:** शिक्षक अपने पूर्व ज्ञान या स्थापित सिद्धांतों से इसकी तुलना करता है—**"जब-जब ऑटिज्म से ग्रसित बच्चे अपने कानों को बंद करते हैं, तब-तब वे किसी अप्रिय या तीव्र ध्वनि जैसे स्कूल की घंटी, जनरेटर की आवाज से संवेदी रूप से परेशान होते हैं, जैसा कि पूर्व मामलों में देखा गया है।"**

2.1.4 **उपनय**

- **दार्शनिक रूप:** उदाहरण के आलोक में वर्तमान पक्ष पर नियम को लागू करना। जैसे- "इस पर्वत पर भी वैसा ही धुआँ है जो अग्नि से व्याप्त है।"
- **विशेष शिक्षा अनुप्रयोग:** शिक्षक वर्तमान स्थिति का सूक्ष्म निरीक्षण करता है—**"इस समय भी विद्यालय के प्रांगण में निर्माण कार्य चल रहा है और ड्रिलिंग मशीन की तीव्र आवाज आ रही है, और आरव का व्यवहार ठीक उसी तीव्र ध्वनि के प्रति अनुक्रिया है।"**

2.1.5 **निगमन**

- **दार्शनिक रूप:** प्रतिज्ञा को अंततः सिद्ध करना। जैसे- "अतः यह पर्वत अग्निवाला है।"
- **विशेष शिक्षा अनुप्रयोग:** शिक्षक अंतिम तार्किक निष्कर्ष पर पहुँचता है—**"अतः यह पूरी तरह सिद्ध है कि आरव का यह व्यवहार कक्षा की किसी सामान्य बात से नहीं, बल्कि बाहर हो रही तीव्र ध्वनि के संवेदी अतिभार के कारण है।"**

3.2.1 दिव्यांगता के प्रकार के अनुसार अनुमान एवं उपमान प्रमाणों का तुलनात्मक वर्गीकरण

शोध के अंतर्गत एकत्रित डेटा के आधार पर विभिन्न प्रकार की दिव्यांगताओं के शिक्षण में दोनों प्रमाणों का रणनीतिक उपयोग और उनका प्राथमिकता अनुपात निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत है:

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

1.1 तालिका दिव्यांगता श्रेणियों में प्रमाणों का रणनीतिक उपयोग

दिव्यांगता श्रेणी	अनुमान प्रमाण (Inference) का विशिष्ट उपयोग	उपमान प्रमाण (Comparison) का विशिष्ट उपयोग	प्राथमिक प्रमाण (प्राथमिकता दर %)
दृष्टिबाधित (Visual Impairment)	**संवेदी और दिशात्मक निष्कर्ष:** ध्वनि तरंगों, कदमों की आहट और हवा के स्पर्श से भौतिक वातावरण और बाधाओं का अनुमान लगाना।	**मूर्त-से-अमूर्त सादृश्यता:** त्रि-आयामी (3D) स्पर्शनीय मॉडलों और ज्ञात घरेलू वस्तुओं की बनावट से ब्रह्मांडीय या भौगोलिक आकृतियों को समझाना।	**उपमान प्रमाण** (65%)
श्रवणबाधित (Hearing Impairment)	**दृश्य-संकेत आधारित अर्थापन:** वक्ता के होठों की गति (Lip Reading), चेहरे के सूक्ष्म हाव-भाव और शारीरिक भाषा से भाषा और संवेगों का अनुमान लगाना।	**सांकेतिक व दृश्य सादृश्यता:** अमूर्त व्याकरणिक नियमों या क्रियाओं को चित्रों, गतियों और सांकेतिक भाषा (Sign Language) के सह-संबंध से सिखाना।	**अनुमान प्रमाण** (55%)
ऑटिज्म व बौद्धिक अक्षमता (ASD / ID)	**अशाब्दिक व्यवहार का आकलन:** छात्र की उंगलियों की थपथपाहट (Stimming) या नजरें चुराने के पैटर्न से उसके आगामी व्यवहारिक संकट (Meltdown) का पूर्वानुमान लगाना।	**सामाजिक और अनुकरणीय सादृश्यता:** 'सोशल स्टोरीज़' और रोल-प्ले के माध्यम से किसी अन्य आदर्श पात्र के व्यवहार से स्वयं के व्यवहार की तुलना करके सामाजिक कौशल सीखना।	**दोनों का समान समन्वय** (50%-50%)

3. प्रदत्त विश्लेषण एवं परिणाम

प्रशिक्षणार्थियों से प्राप्त प्रश्नावली और कक्षा अवलोकनों के सांख्यिकीय और गुणात्मक विश्लेषण से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए:

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

1. **व्यवहार के निदान में अनुमान की सर्वोच्चता:** 85% बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों ने माना कि कक्षा में संकट प्रबंधन और विशेष बच्चों के अशाब्दिक व्यवहार को समझने में 'अनुमान प्रमाण' के तार्किक चरण पाश्चात्य ए.बी.ए. मॉडल की तुलना में अधिक व्यवस्थित और व्यावहारिक हैं।
2. **अवधारणा निर्माण में उपमान की प्रभावशीलता:** 90% मामलों में पाया गया कि जिन पाठ योजनाओं में 'उपमान प्रमाण' (सादृश्य उदाहरणों) का सचेत रूप से उपयोग किया गया था, वहाँ विशेष बच्चों का ध्यान केंद्रित रहने का समय **40% बढ़ गया**।
3. **सैद्धांतिक जागरूकता की कमी:** एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह रहा कि केवल **25% प्रशिक्षणार्थी** ही 'अनुमान' और 'उपमान' शब्दों के दार्शनिक महत्व से सचेत रूप से परिचित थे, यद्यपि वे अनजाने में इसका उपयोग कर रहे थे। इससे सिद्ध होता है कि पाठ्यक्रम में इसके सैद्धांतिक समावेशन की भारी कमी है।

3.1 तुलनात्मक आकलन एवं आलोचनात्मक विमर्श

यदि हम विशेष शिक्षा के फलक पर दोनों प्रमाणों को आमने-सामने रखें, तो दोनों की अपनी अनूठी और पूरक भूमिकाएं दिखाई देती हैं:

- **ज्ञान की दिशा (Direction of Knowledge):** अनुमान प्रमाण की गति **'बाहर से भीतर' (Objective to Subjective)** की ओर होती है। शिक्षक छात्र के बाहरी व्यवहार (लक्षण) को देखता है और उसके आंतरिक मस्तिष्क या मानसिक स्थिति का निष्कर्ष निकालता है। इसके विपरीत, उपमान प्रमाण की गति **'ज्ञात से अज्ञात' (Known to Unknown)** की ओर होती है। शिक्षक बच्चे के पास पहले से मौजूद बाहरी ज्ञान को लेता है और उसके माध्यम से नए, अज्ञात शैक्षणिक ज्ञान की स्थापना करता है।
- **उपयोगिता का क्षेत्र (Domain of Application):** अनुमान मुख्य रूप से एक **'नैदानिक और मूल्यांकन उपकरण'** है। इसके बिना कोई भी विशेष शिक्षक किसी बच्चे के लिए 'व्यक्तिगत शैक्षणिक योजना' (IEP) तैयार नहीं कर सकता। उपमान मुख्य रूप से एक **'शिक्षणशास्त्रीय और प्रस्तुतीकरण उपकरण'** है। यह पाठ्यक्रम के अनुकूलन और शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) के निर्माण में सीधे सहायता करता है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

4. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध आलेख के माध्यम से यह अकादमिक निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय ज्ञानमीमांसा के 'अनुमान' और 'उपमान' प्रमाण आधुनिक विशेष शिक्षा की रीढ़ बनने की पूर्ण क्षमता रखते हैं। बी.एड. विशेष शिक्षा प्रशिक्षणार्थियों के बीच इन प्रमाणों का तुलनात्मक आकलन यह स्पष्ट करता है कि:

"अनुमान प्रमाण विशेष शिक्षक को आँखें और कान प्रदान करता है जिससे वह दिव्यांग बच्चे की अनकही, अदृश्य समस्याओं को सुन और देख सकता है। वहीं, उपमान प्रमाण शिक्षक को वह भाषा और माध्यम प्रदान करता है जिससे वह कठिन से कठिन ज्ञान को बच्चे की सीमित संवेदी दुनिया के अनुकूल बनाकर उसके मस्तिष्क में रोपित कर सकता है।"

5. सुझाव एवं महत्व

1. **पाठ्यक्रम का भारतीयकरण:** बी.एड. विशेष शिक्षा के 'शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया' नामक विषय में भारतीय प्रमाण शास्त्र विशेषकर अनुमान और उपमान) को एक स्वतंत्र इकाई (Unit) के रूप में शामिल किया जाए।
2. **पञ्चावयव आधारित पाठ योजनाएं:** प्रशिक्षणार्थियों को केस स्टडीज और व्यवहार संशोधन लिखते समय न्याय दर्शन के पञ्चावयव प्रारूप (प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन) का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
3. **सादृश्य-आधारित टीएलएम (TLM) विकास:** शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान ऐसे अनुकूलित शिक्षण सामग्री के निर्माण पर बल दिया जाए जो 'उपमान प्रमाण' के सिद्धांतों (जैसे स्पर्शनीय और संवेदी सादृश्यता) पर आधारित हों।

6. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- द्विवेदी, क. (2015). *भारतीय संस्कृति के दार्शनिक तत्व*. इलाहाबाद: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- मिश्र, उ. (2018). *भारतीय दर्शन और ज्ञानमीमांसा*. वाराणसी: चौखम्भा विद्याभवन।
- शर्मा, र. (2020). *न्याय दर्शन के प्रमुख सिद्धांत*. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
- Dash, M. (2018). *Education of Exceptional Children*. New Delhi: Atlantic Publishers.

- Manga l, S. K., & Manga l, S. (2019). *Creating an Inclusive School*. New Delhi: PHI Learning Pvt. Ltd.
- Rao, S., & Kalyanapur, M. (2020). Inclusive Education in India: Examining Emerging Epistemologies. *The Academic Journal of Special Education*, 42(3), 112-128.
- Rehabilitation Council of India (RCI). (2021). *B.Ed. Special Education Syllabus and Regulations*. New Delhi: RCI.
- Skinner, B. F. (1953). *Science and Human behaviour*. New York: Macmillan.